जलवायु परिवर्तन के तीखे सवाल

भारत ही नहीं दुनिया भर में जलवायु परिवर्तन और मौसम की बढ़ती अनियमितता से जुड़े ऐसे हादसे लगातार हो रहे हैं, जिन्हें कभी सदियों में एकाध बार होने वाली परिघटना माना जाता था। भारत को भी अभी से इन संभावित बदलावों के अनुकूल कदम उठाते हुए चलना चाहिए।

रमन कपूर।।

महाराष्ट्र में भारी बारिश से 150 के करीब मौत और हिमाचल प्रदेश के किन्नौर जिले में हुआ भूस्खलन जितना त्रासद है, उतना ही खौफनाक। लेकिन इसे महज एक हादसे के रूप में नहीं देखा जा सकता। भारत ही नहीं दुनिया भर में जलवायु परिवर्तन और मौसम की बढ़ती अनियमितता से जुड़े ऐसे हादसे लगातार हो रहे हैं, जिन्हें कभी सदियों में एकाध बार होने वाली परिघटना माना जाता था। उत्तर अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया हीट वेव और जंगलों की आग से त्रस्त हैं तो चीन और यूरोप में भीषण बारिश और बाढ़ ने तबाही मचा रखी है। ग्लेशियर पिघलने और समुद्र का जलस्तर बढ़ने से डूबने का खतरा झेल रहे छोटे–छोटे द्वीपों के निवासी अलग पूरी दुनिया से अपील कर रहे हैं कि ग्लोबल वॉर्मिंग को कम करने का कोई उपाय जल्द से जल्द करें। इन सबका एक प्रभाव तो यह हुआ ही है कि कल तक जिन लोगों को पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन से जुड़े सवाल दूर की कौड़ी लगते थे, उनमें से भी एक वर्ग को लगने लगा है कि इन सवालों पर बैठकों और बहसों में उलझे रहने के बजाय तत्काल ठोस कदम उठाने की जरूरत है। धीरे–धीरे ही सही, पर इसका असर सरकारों के फैसलों और उनकी योजनाओं पर भी दिख रहा है।

हाल ही में यूरोपियन यूनियन (ईयू) ने एक बड़ी योजना घोषित की है– फिट फॉर 55, जिसका उद्देश्य यह है कि साल 2030 तक ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन के स्तर को 1990 के स्तर से 55 फीसदी नीचे ले आया जाए। योजना यह है कि ईयू से संबंध रखने वाली अर्थव्यवस्थाओं में बिजनेस करने के ढंग में ऐसा सकारात्मक बदलाव लाया जाए, जिससे उक्त लक्ष्य को साधने में आसानी हो। भारत को भी अभी से इन संभावित बदलावों के अनुकूल कदम उठाते हुए चलना चाहिए। हालांकि वैश्विक उत्सर्जन में भारत का हिस्सा अभी मात्र चार फीसदी है और वैकल्पिक ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा देने जैसे कदमों के रूप में उसने इस दिशा में शुरुआत कर दी है। मगर जलवायु परिवर्तन के कारण होने वाले हादसों की बढ़ती संख्या बताती है कि हमारे प्रयासों में काफी तेजी लाने की जरूरत है। अब भी पहाड़ी इलाकों में अधिक से अधिक बांध बनाने और सड़कें चौड़ी करने पर हमारा जोर कम नहीं हो रहा। योजनाकारों का एक हिस्सा मानता है कि पर्यावरण के नाम पर विकास की बलि देने से बेरोजगारी बढ़ेगी और इसलिए हमें विकसित देशों के दबाव में नहीं आना चाहिए। मगर सवाल किसी के दबाव में आने का नहीं, यह समझने का है कि हमारे सामने चुनौती विकास और पर्यावरण में से किसी एक को चुनने की नहीं बल्कि विकास के ऐसे स्वरूप को स्वीकारने की है, जो पर्यावरण के साथ फल–फूल सके और इस अर्थ में हमारे लिए टिकाऊ साबित हो।

चिंता

अशोक वोहरा।

चिंता मत करो। मेरे कहने से तुमने जो किया है, उसके लिए दिए जाने दण्ड से तुम्हारा कुछ नहीं बिगड़ेगा। तुम्हें दण्ड मिलेगा, पर तुम्हारा बाल भी बांका नहीं होगा। मैं जैसा कहता हूँ, बस वैसा ही कल करना। कल प्रातः काल सूर्य तट पर श्रुँ रां रामाय नमः इस मंत्र का जाप करते रहना। कोई कुछ कहे, तुम कुछ मत सुनना, बस यह मंत्र प्रेम–भाव से जपते रहना। प्रातः हुई। हनुमान जी स्नान कर सरयू तट पर खड़े होकर मंत्र जाप करते। दरबार लग जाने पर जब हनुमान दरबार में उपस्थिति न हुए तो श्रीराम ने पूछा – हनुमान कहाँ है अभी तक नहीं आए ? विश्वामित्र ने कहा – आप आज दण्ड देने वाले थे शायद इसलिए डर कर नहीं आया। नारद ने कहा – मैंने अभी थोड़ी देर पहले सरयू तात पर उसे स्नान ध्यान करते हुए देखा है।

संपादकीय

संत समाज पहल करे

विद्वान संतों की आज भी कोई कमी नहीं। वर्ष 1954 में अखाड़ा परिषद का गठन हुआ। उसका उद्देश्य अखाड़ों के बीच एकता और सामंजस्य स्थापित करना था। इसके बहुत ही अच्छे परिणाम सामने आए। अब समय आ गया है जब संत समाज किसी ऐसी संस्था का गठन करे, जो संतों के बीच असंतों को तलाश कर उन्हें बाहर का रास्ता दिखाए। यदि समाज किसी मुद्दे पर मौन रहता है तो उसकी मजबूरी को समझा जा सकता है, लेकिन उस संत समाज के सामने कौन सी मजबूरी है, जिसने बादशाहों–राजाओं को खरी–खरी सुना दी। जब फतेहपुर सीकरी में बादशाह अकबर ने संत कुंभन दास को बुलाया और विदाई के समय धन–दौलत देनी चाही तो उन्होंने यही बात कही थी कि हम कछु लेंगे नहीं, बस एक ही बात मांग रहे हैं कि हमें आगे से बुलाइयो ना। जगद्गुरु शंकराचार्य, रामानंदाचार्य, कबीर, तुलसी, सूर और मीरा की संत परंपरा से ओत–प्रोत रहा है यह समाज। इससे उन्हें बाहर निकाला जाना चाहिए, जो साधु वेशधारी बन समाज को भ्रमित कर रहे हैं। इस धर्म ध्वजा का वाहक साधुओं को ही बनना पड़ेगा।

तमाम निश्चल संतों के बीच यदि कुछ अपराधियों द्वारा धारण किया गया केसरिया बाना और साधु वेश कुछ लोगों को भ्रमित कर रहा है तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं।

अपराधी बने साधु

बृजेश शुक्ल।।

गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस में लिखा है– 'लखि सुबेष जग बंचक जेऊ। बेष प्रताप पूजिअहिं तेऊ। उघरहिं अंत न होइ निबाहू। कालनेमि जिमि रावन राहू।'
यानी बहुरूपिए भी यदि साधु का वेश धर लें तो संसार उनके वेश के प्रभाव से उनकी वंदना करता है, परंतु एक न एक दिन उनकी प्रकृति सामने आ ही जाती है। इस तरह के कालनेमियों का वेश तो बड़े–बड़े विद्वानों को भी भ्रमित कर देता है। इसलिए तमाम निश्चल संतों के बीच यदि कुछ अपराधियों द्वारा धारण किया गया केसरिया बाना और साधु वेश कुछ लोगों को भ्रमित कर रहा है तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं।

अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष महंत नरेंद्र गिरि की संदिग्ध मौत के मामले में जो तथ्य सामने आ रहे हैं, उनसे एक बात और साफ हो गई है कि समाज को ऐसे अपराधियों को पहचानना होगा जो साधु वेश में इस दुनिया को ही नहीं बल्कि अपने गुरु को भी प्रताड़ित कर रहे हैं। वे अपने स्वार्थ के चलते कोई भी हरकत करने को तत्पर हैं। लेकिन जब उनके गुरु और आश्रम के लोग इन साधु वेशधारी अपराधियों को तब तक नहीं पहचान पाते, जब तक उनके कारनामों का काला चिट्ठा समाज के सामने नहीं आ जाता तो फिर आम जनों की क्या

बात की जाए।

महंत नरेंद्र गिरि की मृत्यु के मामले पर जो कहानी सामने आ रही है, वह आज की नहीं है। यह सिलसिला पुराना है। सच पूछिए तो धार्मिक स्थल इनसे अब बचे ही नहीं हैं। तमाम अपराध करने के बाद ऐसे कई लोग साधु वेश धारण कर तीर्थों में जाकर छुप जाते हैं ताकि गिरफ्तारी से बच सकें। पिछले दिनों अयोध्या में एक साधु वेशधारी को पटना पुलिस पकड़ कर ले गई, जिसे वह 10 साल से तलाश रही थी। वह अपराधी यहां महंत बना बैठा था। अयोध्या ही नहीं, तमाम धार्मिक स्थलों में अपराधी शरण लेते रहे हैं। कुख्यात डकैत शिव कुमार उर्फ ददुआ बरसात के दिनों में चित्रकूट में भगवा वेश धारण कर छुप जाता था। धर्म के नाम पर धन की धारा बह रही है। राजनीति और बाहुबल का खुला खेल हो रहा है।

संन्यास और धर्म की धारा तो पूरे संसार के प्रति वैराग्य पैदा करती है। संन्यासी बड़ी–बड़ी गाड़ियों में बैठकर जीवन के आनंद नहीं लेते। आलीशान जीवन नहीं गुजारते। उनका जीवन ही तपस्या से भरा है, लेकिन कुछ लोग योजना बनाकर रोजी–रोटी और लूट के लिए कथित धर्म के मार्ग पर चल देते हैं। राजनीति के अपराधीकरण पर बहुत चर्चा होती है, लेकिन धर्म के नाम पर जो अपराधी चोला ओढ़कर घुस गए हैं, उन पर संत–महंत भी चर्चा नहीं करना चाहते। तमाम मंदिरों पर कब्जे को लेकर संघर्ष चल रहा है। मठों, मंदिरों की संपत्ति के विवाद को लेकर दशकों से मुकदमे चल रहे हैं। क्या अयोध्या, क्या मथुरा–वृंदावन, क्या चित्रकूट! वहां स्थानीय अदालतों में बड़ी संख्या में संत वेशधारी घूमते मिल जाएंगे। सभी मुकदमे की पैरवी के लिए आते हैं।

जो साधु वेशधारी धर्म को व्यापार बनाए हुए हैं और श्रद्धालुओं को लूट रहे हैं, उनके विरुद्ध संतों के बीच से आवाज क्यों नहीं उठती? उन्हें संत समाज से बाहर क्यों नहीं किया जा रहा? मठ–मंदिरों में बह रहा पैसा उन लोगों को आकर्षित कर रहा है, जो किसी तरह से अमीर बनना चाहते हैं। महामंडलेश्वर बनने के लिए करोड़ों रुपयों की बोली लगाई जाती है।

अष्टयोग-4907

1			4	3		2
5	33	7	35		28	
		2		6		5
	32	3	38		32	
7	5			4	2	1
	33	1	31		30	4
3			6		5	

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 4906 का हल

4	3	7	5	6	1	2
5	33	3	35	1	27	7
6	1	4	7	2	5	3
3	26	2	40	7	34	6
1	3	6	7	5	2	4
2	29	1	33	4	30	5
7	4	5	2	3	6	1

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

जिम्मेदार कौन है?

मोहन। नरेंद्र गिरि ने इस मुद्दे पर चर्चा शुरू की थी। ऐसे लोगों की सूची जारी की थी, जो संत के बीच में असंतों का काम कर रहे थे। लेकिन विडंबना देखिए कि वह अपने ही आश्रम में घुसे साधु वेशधारी अपराधियों को नहीं पहचान पाए। जब तक पहचाना, बहुत देर हो चुकी थी। देश में आज साधु समाज संकट में है। उनके बीच कुछ बहुरूपिये घुस आए हैं। कुछ जादूगरी दिखाकर लोगों को ठगने वाले और कुछ साधु वेश में असाधु। क्या संत समाज की जिम्मेदारी नहीं है कि वह साधु वेशधारी उन लोगों को किनारे लगाए जिन्हें ना शास्त्रों का ज्ञान है, ना वेदों का? यह सवाल तो बनता है कि जब महंत नरेंद्र गिरि पर उन्हीं का शिष्य कीचड़ उछाल रहा था, उस समय साधु समाज कहां था? धर्म के नाम पर जो बड़ी–बड़ी दुकानें खुल गई हैं, उसका जिम्मेदार कौन है? इसलिए धर्म का चोला ओढ़ रहे थे, जिससे उनकी दुकान और तेजी से चले। बड़े–बड़े लोग उनके चरणों में गिरें और धन की धारा बहे।